हिन्दू चेतना (पाक्षिक)
E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com
युगाब्द 5119 | हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्। मम दीक्षा हिन्दुरक्षा मम मंत्रः समानता।। | 2074 वि.सं.

सभी पूज्य सन्त चरणों में सादर निवेदन

विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित

15वीं धर्मसंसद

पेजावर मठ, उडुप्पी (कर्नाटक)

मंगल तिथियाँ : मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी-2, सप्तमी विक्रम संवत् 2074

(दिनांक : 24, 25, 26 नवम्बर, 2017)

श्रीचरणों में सादर साष्टांग प्रणिपात्

विनम्र आग्रह है कि उपरोक्त तिथियों में होने वाली धर्मसंसद में आप देश के सभी मत, पंथ, दर्शन, उपासना पद्धति को मानने वाले पूज्य सन्त सादर आमंत्रित हैं।

अतः अभी से उक्त तिथियों को धर्मसंसद हेतु निर्धारित करने की कृपा करें। आवागमन में कोई असुविधा से बचने के लिए अपना जाने-आने का टिकिट शीघ्र ही आरक्षित करवाने का कष्ट करें।

पुनश्च प्रणाम।

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
दिन दर्शिका	4	चतुर्थ सत्र	17
प्रथम सत्र	5	प्रस्ताव - 'सामाजिक समरसता'	23
द्वितीय सत्र	8	प्रस्ताव - गोरक्षा	24
तृतीय सत्र	12	प्रस्ताव - श्रीराम जन्मभूमि	25

भाद्रपद कृष्ण पक्ष विक्रम संवत् २०७४
१६ अगस्त से ३१ अगस्त २०१७ ई. तक

सूर्य दक्षिणायन — शरद ऋतु

दिन	तिथि	नक्षत्र	प्रविष्टि सौर मास	दिनांक आंग्लमास	विशेष विवरण
बुधवार	नवमी	रोहिणी	१ भाद्रपद	16	संक्रान्ति, गूग्गा मवमी
गुरुवार	दशमी	मृगशिरा	२	17	
शुक्रवार	एकादशी	आर्द्रा	३	18	अजा एकादशी व्रत, वत्स द्वादशी
शनिवार	द्वादशी	पुनर्वसु	४	19	शनि प्रदोष व्रत
शनिवार	त्रयोदशी	00	००	00	क्षय
रविवार	चतुर्दशी	पुष्य	५	20	मास शिवरात्रि व्रत, रवि पुष्य योग
सोमवार	अमावस्या	श्लेषा	६	21	कुशोत्पाटनी अमावस्या
मंगलवार	प्रतिपदा	मघा	७	22	शरद ऋतु प्रारंभ
बुधवार	द्वितीया	पूर्वा फाल्गुनी	८	23	
गुरुवार	तृतीया	उत्तरा फाल्गुनी	९	24	हरितालिका तीज, श्री वराह जयंती
शुक्रवार	चतुर्थी	हस्त	१०	25	गणेश चतुर्थी, विनायक व्रत
शनिवार	पञ्चमी	चित्रा	११	26	ऋषि पञ्चमी
रविवार	षष्ठी	स्वाती	१२	27	लोलार्क षष्ठी
सोमवार	सप्तमी	विशाखा	१३	28	संतान सप्तमी
मंगलवार	अष्टमी	अनुराधा	१४	29	दधीचि जयंती, श्री राधाष्टमी
बुधवार	नवमी	ज्येष्ठा	१५	30	श्रीचन्द्र नवमी
गुरुवार	दशमी	मूल	१६	31	

श्री अष्टावक्र गीता (अष्टावक्र उवाच)

विरक्ता विषयद्वेष्टा, रागी विषयलोलुपः ।
ग्रहमोक्षविहीनस्तु न विरक्तो न रागवान् ॥६॥ १६

"विषय से द्वेष करने वाला विरक्त और विषय का लोभी रागी कहलाता है। ग्रहण और त्याग की भावना का भी त्याग करने वाला न विरक्त है, और न रागवान्।"

हेयोपादेयता तावत्संसार विटपांकुरः ।
स्पृहा जीवति यावद्वैनिर्विचारदशास्पदम् ॥७॥ १६

"जब तक स्पृहा जीवित है, जो कि विचार-हीनता की दशा है, तब तक ग्रहण और त्याग की भावना भी जीवित है। और यही (ग्रहण-त्याग की भावना) संसार वृक्ष का अंकुर है।"

प्रथम सत्र

(31 मई, 2017 सायं 03.00 बजे)

सत्राध्यक्ष - ज०गु० शंकराचार्य पू० स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती जी महाराज

दीप प्रज्ज्वलन

दिनांक 31 मई, 2017 (ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी विक्रम संवत्सर 2074) को भोपतवाला (हरिद्वार) स्थित श्री उदासीन कार्ष्णि नारायण आश्रम के मुख्य सभागार में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पूज्य स्वामी रामाधाराचार्य जी महाराज, जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्री स्वामी कृष्णाचार्य जी महाराज, पूज्य स्वामी गोविन्द देव गिरि जी महाराज, डॉ0 रामेश्वरदास श्री वैष्णव जी महाराज एवं डॉ0 रामविलास वेदान्ती जी आदि सन्तों ने दीपप्रज्ज्वलन किया, इसके साथ ही वेदपाठी विद्यार्थियों द्वारा स्वस्तिवाचन किया गया। प्रथम सत्र में ज्योतिष पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य पूज्य स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती जी महाराज ने अध्यक्षता की।

भारत माता मंदिर के संस्थापक पूज्य स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि जी महाराज अस्वस्थता के कारण कार्यक्रम में न आ पाए थे, इसलिए उनका संदेश पढ़कर सुनाया गया।

डॉ० प्रवीणभाई तोगड़िया जी (प्रस्ताविकी)

विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष डॉ0 प्रवीणभाई तोगड़िया जी ने अपने प्रस्ताविक उद्बोधन में कहा कि आज भी समाज में स्पर्श-अस्पर्श का भेद दिखाई देता है। छुआछूत मुक्त भारत कैसे बने? इस विषय पर पूज्य सन्तों का मार्गदर्शन हमें चाहिए। श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण के संदर्भ में सत्ता एवं संसद मौन दिखाई देती है। पूज्य सन्तों ने प्रारम्भ से कानून बनाने की बात कही है। हमारा मानना है कि श्रीराम जन्मभूमि न्यायालय का विषय नहीं है। गंगा की अविरलता-निर्मलता पर भी प्रश्नचिह्न है। गाय की हत्या तो अभी भी हो रही है। केन्द्रीय कानून बनाने की बात लम्बे अरसे से चली आ रही है। जनसंख्या का असंतुलन बढ़ता जा रहा है, मठ मन्दिर की व्यवस्था के विषय के साथ-साथ ऐसी और भी अनेक समस्याएँ हिन्दू समाज की हैं, जिनके विषय में पूज्य सन्तों का मार्गदर्शन आवश्यक है।

पूज्य स्वामी गोविन्द देवगिरि जी महाराज (पुणे)

अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों की बस्तियों में जागरण हेतु जाएँ, उन्हें धर्मोपदेश दें जिससे वह हिन्दू मूल्यों से अवगत हो सकें। सामाजिक समरसता निर्माण करने में सन्तों की महती भूमिका हो सकती है।

गीता मनीषी पू० स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज (वृन्दावन)

जब भी हम धार्मिक आयोजनों का कार्यक्रम करते है तब उसमें वाल्मीकि समाज एवं रविदासी समाज आदि के सज्जनों को मंच द्वारा सम्मानित किया जाए। इस प्रकार करने से समरसता हिन्दू समाज में बढ़ेगी एवं समाज में अच्छा संदेश जायेगा।

पूज्य जगद्गुरु रामानुजाचार्य कृष्णाचार्य जी महाराज (ऋषिकेश)

छुआछूत अगर घृणास्पद है, तब उसे अवश्य नकारना चाहिए। भारतवर्ष में छुआछूत का सबसे प्रथम विरोध पूज्य रामानुजाचार्य महाराज ने ही किया। रामानुजाचार्य जी के सन्देशों को समाज में प्रसारित-प्रचारित करना चाहिए। उन्होंने अपने नौ ग्रंथ संस्कृत भाषा में ही लिखे, एक भी ग्रंथ प्रादेशिक भाषा में नहीं लिखा।

पू० स्वामी नारायण संप्रदाय से नौत्तम स्वामी जी महाराज (बड़ताल, गुजरात)

आरक्षण का उन्माद जो हमारे समाज में लेने हेतु

उमड़ रहा है, यह समाज में विभेद पैदा कर रहा है, उस ओर चिंतन करना चाहिए। गुजरात में सम्पन्न पटेल समाज का आरक्षण हेतु आन्दोलन समीक्षा का विषय है। देश में दिए जाने वाले सभी प्रकार के आरक्षणों की समीक्षा होनी चाहिए।

पू० म० म० रामशरण दास जी महाराज (कुल्लू-हिमाचल प्रदेश)

अब समय केवल बैठकर चर्चा करने का नहीं है बल्कि गाँव-गाँव जाकर जनजागृति पैदा करनी होगी, तभी हिन्दू समाज वर्तमान में हो रहे धार्मिक ह्रास पर नियंत्रण कर पायेगा।

पू० रामेश्वरदास जी महाराज (तराना-मध्यप्रदेश)

रामानंद जी महाराज की समाज को दी गई महान शिक्षा को हमें सदा स्मरण रखना होगा राम को भजे सो राम का होई। सामाजिक समरसता में उनकी भूमिका सर्वोपरि रही है। उनके द्वारा दी गई शिक्षा और उनके आदर्श समाज में समरसता निर्माण करने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

पूज्य डॉ० रामेश्वरदास श्रीवैष्णव जी महाराज (ऋषिकेश)

समरसता के महान आदर्श के रूप में गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज ने श्रीरामचरित मानस में भगवान श्रीरामचन्द्र को बहुत जगह उल्लेखित करके दिखाया है, जिसे समाज को समझना होगा। हिन्दू समाज में छुआछूत लाने का कार्य मुगलों ने किया है जिनके लिए इतिहास के पन्नों को पलट कर देखना होगा और समाज को जागरूक करना होगा।

पूज्य सद्गुरु दिलीप सिंह जी नामधारी (पंजाब)

गुरुवाणी में स्पष्ट लिखा 'जाति का गर्व न कीजिए मूरख गंवारा'। जिन्हें हम अछूत कहते उन्हें स्वयं प्रसाद प्रदान करता हूँ अपने लंगरों में एवं उनके घर जाकर भी प्रसाद ग्रहण करता हूँ। जाति भेद समाप्त करने के लिए सबसे बढ़िया तरीका है अंतर्जातीय विवाह।

पूज्य साध्वी चन्द्रकला जी (कबीर पंथी, छत्तीसगढ़)

सामाजिक समरसता कूट-कूट कर भरी है अंतर्जातीय विवाह के अंदर। अन्तर्जातीय विवाह सामाजिक समरसता निर्माण करने में महती भूमिका निभा सकते हैं।

पूज्य साध्वी समर्पिता जी (रायवाला, देहरादून)

क्या वर्ण-व्यवस्था को चूर करके हम समरसता स्थापित कर पायेंगे? हमारी समरसता तत्व आधारित है। झूठा खाना हमारी संस्कृति नहीं है, हम सामूहिक भोज पहले भी साथ करते थे लेकिन समरसता के नाम पर झूठा खाना नहीं सीखना है क्योंकि इससे हमारे संस्कार चकनाचूर हो जायेंगे। अविरल गंगा के लिए अभी तक कोई प्रयास नहीं हुआ है। श्री संतों की हुंकार में शक्ति है। गंगा को बांधों में नहीं बंधने देना है अगर वह बंध गई तब फिर अविरल गंगा का स्वप्न साकार नहीं हो पाएगा।

पूज्य रवीन्द्रपुरी जी महाराज (सचिव, महानिर्वाणी अखाड़ा, हरिद्वार)

कुंभ 2013 में समस्त साधु-समाज ने एकत्रित होकर स्व0 अशोक सिंहल जी के आग्रह से गंगा की अविरलता के लिए हुंकार भरी थी। गंगा मैय्या अविरल हो, यह हमारा संकल्प है। उसके लिए हमें निरन्तर प्रयास करते रहना है। दूसरा विषय छुआछूत का है। साधुओं ने जाति व्यवस्था नहीं बना रखी इसलिए उनके यहाँ भण्डारे आदि में कभी भेदभाव नहीं देखा जाता है। देश में जाति व्यवस्था नेताओं के द्वारा है जो संसद में आरक्षण के माध्यम से सांसदों को चुनती है, जिसे खत्म करना चाहिए।

पूज्य स्वामी देवानंद जी महाराज (सचिव, जूना अखाड़ा, हरिद्वार)

समाज के अंदर जो पिछड़ा वर्ग है उसके अंदर भगवान समान रूप से व्याप्त है, उसको सर्वप्रथम

शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी क्योंकि इसके बिना वह समाज विकसित नहीं हो सकता है। सरकार मठ-मंदिरों के धन का जो अधिग्रहण किया है उसे वनवासी-गिरिवासी एवं पिछड़े जनों के लिए उपयोग करना चाहिए। तभी सच्ची समरसता आ पायेगी। हिन्दू समाज में भंगी, मेहतर का कार्य करने वाले ये कौन लोग है? ये वह है जिन्होंने मुगलों से युद्ध किया, जिन्हें हार के पश्चात गंदा उठाने के लिए बाध्य किया गया। उन्होंने गंदा उठाना स्वीकार किया परन्तु धर्म परिवर्तन नहीं किया। मुगलों के आगे झुके नहीं।

पूज्य शिवशंकर दास जी महाराज (सचिव, दिगम्बर अनी अखाड़ा)

हमारे यहाँ महामण्डलेश्वर आदि बनाये जाते हैं उसमें जातिगत आधार नहीं देखा जाता है। हर सामाजिक कार्यों में जातिगत संबोधन न लिखा जाये जैसे-ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य समाज द्वारा यह धर्मार्थ कराया जा रहा है। सामाजिक कार्यों में इस प्रकार के सम्बोधन से समरसता निर्माण नहीं हो सकती। सब मिलकर सामाजिक कार्य करें।

पूज्य जीवन मुक्तानन्द पुरी जी महाराज (उड़ीसा)

कान्वेन्ट स्कूल हिन्दूओं के पैसे से हिन्दू समाज को परिवर्तित करके तोड़ रहे हैं, इसलिए शिक्षा से वनवासी समाज को हिन्दू मूल्यों के साथ जोड़ा जाये। समाज को कान्वेन्ट स्कूलों के कुकृत्यों से जागरूक करें।

सत्राधिकार पूज्य जीतेन्द्रनाथ प्रधान जी महाराज (असम)

ब्रिटिश शिक्षा (ऐजुकेशन) ने हमारे समाज को परिवर्तित कर दिया है, इस शिक्षा ने समाज को मानसिक गुलाम बना दिया है। इसलिये हिन्दू शिक्षा पद्धति को सरकार पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाये तभी वास्तविक भारत का निर्माण हो सकेगा।

पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती जी महाराज (अध्यक्षीय उद्बोधन)

जिस गुरुकुल में भगवान राम पढ़े उसी गुरुकुल में निषादराज गुह भी पढ़ा है जो कि भगवान श्रीराम का परम मित्र है। राष्ट्र की स्वतंत्रता के पश्चात् छुआछूत को और ज्यादा बढ़ाया गया, हिन्दू समाज को बदनाम करने के लिए छुआछूत को झूठा प्रचारित किया गया। गर्भ-गृह में भगवान की पूजा करने के लिए सभी जाति के लोग जा सकते हैं लेकिन पवित्र होकर। मर्यादा को लेकर हमें समाज को आगे लेकर चलना है। आरक्षण का लाभ जो पीढ़ियों से नौकरियों आदि में ले रहे वह लेते ही जा रहे है, धनाढ्य होते हुए भी दूसरी तरफ जो दीन-गरीब स्थिति में पीढ़ियों से पड़ा हुआ है, वह आज तक वैसी ही स्थिति में है।

समरसता के लिए आरक्षण को केवल जातिगत आधार न बनाया जाये बल्कि वर्तमान आर्थिक स्थिति का आँकलन भी किया जाना चाहिए। इस देश में जातिगत आधार को पुष्ट करने का कार्य नेताओं ने किया है व्यवहार में समरसता नहीं चलेगी। बल्कि सिंद्धातों में भी होनी चाहिए। हिन्दू समाज में समरसता कूट-कूट कर भरी है, हमारे धार्मिक आयोजनों के भण्डारों में कभी पास बैठे व्यक्ति की कोई जात नहीं पूछी जाती किसी भी व्यक्ति के द्वारा। ❑

आत्मीय श्री अशोक तिवारी जी,

विश्व हिन्दू परिषद भारतीय संस्कृति के विश्वव्यापी विस्तार के लिए सक्रिय हैं विश्व हिन्दू परिषद के प्रत्येक रचनात्मक एवं सुधारात्मक कार्यक्रमों में अखिल विश्व गायत्री परिवार सदैव ही सक्रिय भूमिका रही है।

श्री दिनेश चंद्र, श्री चम्पतराय, श्री जीवेश्वर मिश्र विश्व हिन्दू परिषद के सभी पदाधिकारियों को ऋषियुग्म की ओर से आशीर्वाद एवं शुभकामनायें कहें।

(डॉ. प्रणव पण्ड्या)

द्वितीय सत्र

(01 जून, 2017 - ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी 2074)

सत्राध्यक्ष - ज०गु० रामानन्दाचार्य पू० स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज

पूज्य श्रीमहंत फूलडोलबिहारी जी महाराज (वृन्दावन)

गोमाता राष्ट्रीय धरोहर है, राष्ट्रीय प्राणी घोषित होना चाहिए। गोरक्षा के लिए हमारे असंख्य सन्तों ने बलिदान दिए हैं। गोरक्षा हेतु कठोर कानून होना चाहिए।

गंगा यमुना की स्वच्छ अविरल धारा बहे। मार्गदर्शक मण्डल इनकी स्वच्छता की मांग करता है। गंगा यमुना को स्वच्छ रखने के लिए सरकार के साथ समाज को भी जागरूक करने की आवश्यकता है। केन्द्र की मोदी सरकार से कामना करता हूँ कि सन्तों की भावना का ध्यान रखे।

पूज्य म०म० स्वामी शान्ति स्वरूपानन्द जी महाराज (उज्जैन)

अपनी सरकारें होती हैं तो हमारी आवाज धीमी होती है। सरकार कोई भी हो, हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सरकार पर आश्रित नहीं रहना चाहिए। सरकारे किसी की नहीं होती हैं, जब वह सरकार में सत्ता के रूप में आरूढ़ होती हैं, वैसे ही वह पराई हो जाती हैं। इसलिए हिन्दू समाज को स्वयं अपने को सशक्त बनाकर रखना पड़ेगा। आज प्रश्न मन्दिर निर्माण का है। राम मन्दिर के निर्माण के लिए हमें सरकार पर दबाव बनाना चाहिए।

गोहत्या के विषय में भी यही चिन्ता है। गोहत्या रोकने के लिए कठोर कानून बनाने के लिए सरकार पर दबाव डालना चाहिए। आज शहर में गोरक्षक गोपालन नहीं कर सकते, इस पर हमें विचार करना चाहिए।

गंगा की स्वच्छता का भी विषय ऐसा ही है। अविरल स्वच्छ गंगा बहे, यह हमारी मांग है। सरकार को इस दिशा में तीव्र गति से कार्य करना चाहिए। समाज को भी शिक्षित करने की आवश्यकता है। उज्जैन में क्षिप्रा नदी भी गन्दगीयुक्त है।

हिन्दू समाज के मठ मन्दिर भी सरकारी अड्डे होते जा रहे हैं। पवित्र स्थानों पर मांस मदिरा आदि पर प्रतिबन्ध होना चाहिए। इन सभी के लिए साधु सन्तों को इस मंच की बैठक के अतिरिक्त भी निरन्तर कार्य करना चाहिए। गंगा यमुना और गौ का उचित संरक्षण होना चाहिए।

पूज्य म०म० स्वामी अनुभूतानन्द जी महाराज (दिल्ली)

आज सन्त सत्ता और राज सत्ता दोनों पर विशेष दायित्व है। समाज की विकृतियों को दूर करने के लिए सन्तों का विशेष दायित्व है। श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन हेतु माननीय अशोक जी सिंहल ने सन्तों के लिए विशेष प्लेटफार्म तैयार किया। आज सन्तों का विशेष दायित्व है कि राम जन्मभूमि पर मन्दिर के निर्माण के लिए सरकार को तैयार करे, उसे कानून बनाने के लिए बाध्य करे।

आज गंगा, यमुना, गौ और मठ मन्दिर पर विशेष चर्चा होती है, इन पर चर्चा दीर्घ काल से होती आ रही है। गंगा, यमुना का विशेष महत्त्व है क्योंकि यह राष्ट्र की जीवनदायिनी है। गंगा यमुना को स्वच्छ करने की जिम्मेदारी केवल सरकारों की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज की है।

बूचड़खानों को चलाने का काम हिन्दू समाज के कुछ लोग भी कर रहे हैं। सन्तों को ऐसे लोगों का बहिष्कार करना चाहिए। हम सबको राष्ट्र सत्ता और सन्त सत्ता दोनों को समन्वय बनाकर रखना चाहिये। आज राष्ट्र सत्ता हमारे विचारों की है। अपने विचारों को सत्ता में भी अपनी बात पूरे दबाव के साथ

कहनी चाहिए।

पूज्य आचार्य महामण्डलेश्वर विशोकानन्द जी महाराज (महानिर्वाणी अखाड़ा)

2013 कुम्भ के अवसर पर हम सभी सन्तों ने मोदी जी को प्रधानमंत्री का प्रस्ताव रखा था। मोदी जी का दायित्व है कि उनको सन्तों की भावनाओं के अनुसार राम मन्दिर के निर्माण का रास्ता साफ करना चाहिए। आज हमें अनुभव हो रहा है कि हमारी सरकार की अपेक्षा कांग्रेस सरकार अधिक सुनती है। सरकार को अपने वायदों और घोषणाओं की चिन्ता करनी है। सन्तों का सरकार से भरोसा उठ रहा है। आज मोदी और योगी दोनों सन्तों की अपेक्षाओं पर खरा उतरे। आज लोग विचार करते हैं कि यह कुछ करेंगे या नहीं?

गो, गंगा, मठ मन्दिरों से हमारा अस्तित्व है। मठ-मन्दिरों में गोसेवा हो, ये हमारा धर्म है। सन्तों ने सदा से इस परम्परा का पालन किया है। गो, गंगा, मठ मन्दिरों का संरक्षण होना चाहिए। आज जैन समाज के लोग भी कत्लखाने चला रहे हैं। जिसके पेट में गाय का गोस्त वह हमारा कभी नहीं हो सकता दोस्त। इस बात को हमें हमेशा ध्यान रखना होगा। आज बड़े-बड़े लोग गौ नहीं पालते, कुत्ता पालते हैं। सन्तों को ऐसे लोगों का बहिष्कार करना चाहिए। सन्तों को पूज्य करपात्री महाराज की तरह यह दृढ़ व्रत लेना होगा जिसके घर में गाय नहीं पली, उसके घर में जल एवं अन्न ग्रहण न करें।

पूज्य स्वामी प्रेमदास जी महाराज

पहाड़ी क्षेत्रों में गायें घूमती रहती हैं, वे किसानों की फसलें नष्ट करती हैं, क्योंकि लोग वहाँ छोड़ जाते हैं। गोमाता की इस प्रकार की दुर्दशा न हो, इसका धयान देना चाहिए। इसके लिए सन्तों को समाज को जागरूक करना चाहिए। सन्तों का जिसे आशीर्वाद होगा, वही फलीभूत होगा। गंगा, गाय एवं मंदिर को लेकर जो शासन करेगा, वही सुखी रह पायेगा।

पूज्य मान महंत जगन्नाथ जी महाराज (नेपाल)

आज नेता असत्य बोलता है, ईमानदार नहीं हैं। नेता लोग साधु-सन्तों की बात सुनते नहीं हैं। जब तक राम की कृपा नहीं होगी, नेताओं की बुद्धि ठीक नहीं होगी। नेताओं में नैतिकता नहीं है। सारे विश्व, भारत और नेपाल में सब जगह यही देखा जा रहा है कि नेता नैतिकता से रिक्त दिख रहा है। नेता के अन्दर झूठ, बेईमानी और अभद्रता देखी जा रही है। नेपाल में सापेक्ष को निरपेक्ष हिन्दू कर दिया है। नेपाल में हिन्दू मंदिरों के प्रति वहाँ की सरकारें उदासीन व्यवहार करती दिख रही हैं। हम गाय की सेवा के लिए तत्पर रहते हैं पर उन्हें पालने वाला कोई नहीं मिलता है।

पूज्य म०म० स्वामी चित्तप्रकाशानन्द जी महाराज (वृन्दावन)

आज हिन्दू समाज में समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। विदेशी ताकतें भारत में हिन्दू मूल्यों के ह्रास के लिए निरंतर सक्रिय हैं। हम सब इस ओर गंभीर नहीं है, भविष्य में गैर-हिन्दुओं की यह गतिविधियाँ गंभीर समस्या के रूप में खड़ी दिखेंगी।

गाय की खुलेआम घोषणा करके हत्या होती है। समाज में कोई प्रतिक्रिया नहीं होती है। सरकार समाज की स्थिति को समझती है। यहाँ मन्दिर टूटते हैं, गोहत्या होती है लेकिन सरकारें शान्त हैं क्योंकि हमारा समाज कमजोर है। समाज यदि सबल होगा तो सरकारें भी बात सुनेंगी। गोचरों की व्यवस्था हो, जिससे गोपालन हो सके। आज गोचरों के अभाव के कारण भी लोग गाय नहीं पालते।

पूज्य स्वामी गुरुपदानन्द सरस्वती जी महाराज (भारत सेवाश्रम संघ, कोलकाता)

भारतीय संस्कृति की पहचान है गो, गंगा और मठ मन्दिर। सन्त समाज इनकी रक्षा करता है। मठ मन्दिर नहीं रहेगा तो भारतीय सभ्यता भी नहीं रहेगी।

सरकार इनका अधिग्रहण बन्द करे। हमारे मठ-मन्दिरों का धन सरकार को नहीं लेना चाहिए। उस धन को अर्थाभाव वाले मठ मन्दिरों में लगाना चाहिए। जिस मंदिर-मठ का आर्थिक स्रोत ज्यादा है, उन्हें अपनी वित्तीय सहायता उन मंदिरों को प्रदान करनी चाहिये जो अर्थाभाव में खण्डहर या पूजा-पाठ आदि धार्मिक गतिविधियों से रहित है। हमें मठ-मन्दिरों के अधिग्रहण पर सरकार का विरोध करना चाहिए। हमें अन्याय का प्रतिकार करना चाहिए।

केरल और बंगाल में हिन्दू भी बीफ खाता है।

वशिष्ठाश्रम वेदी पूज्य प्रसाद स्वामी जी महाराज (उ० आन्ध्र प्रदेश)

80 प्रतिशत लोग पूर्वोत्तर में हैं, हिन्दू धर्म में उनका प्रगाढ़ विश्वास है। विश्व हिन्दू परिषद के मार्गदर्शन में 200 आदिवासियों को पुजारी के रूप में तैयार किया है, जो आदिवासी क्षेत्रों में मंदिरों का संचालन कर रहे हैं, जिससे ईसाई प्रभाव कम हुआ है, वहाँ कोई पण्डित, पुजारी नहीं मिलता था, जिससे मंदिरों में पूजा भी नहीं होती थी।

दत्तात्रेय पीठाधीश्वर आर० के० गुरु स्वामी जी महाराज (तेलंगाना)

गाँव-गाँव में मन्दिर बन्द हो रहे हैं, चर्च खड़े हो रहे हैं। हमारा दायित्व है कि हम ऐसे गाँवों में जाएँ। हमने अपने प्रयास से 18 प्रकार की जनजाति को बुलाकर हवन कराया और उन्हें घर वापसी कराया। वहाँ का बंजारा समाज पहले मुस्लिम समाज की धार्मिक गतिविधियों में भाग लेता था। मुस्लिम समाज गाँव-गाँव घूमकर रूपया, कपड़ा, देकर अपनी जनसंख्या बढ़ाने के लिये अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोगों का धर्मान्तरण कराते थे। आन्ध्रप्रदेश में मंदिर बंद होते जा रहे हैं और चर्च, मस्जिदों का निर्माण बढ़ रहा है। वहाँ गाँव-गाँव जाने वाला कोई हिन्दू धर्म प्रतिनिधि देखने में नहीं आता है।

धर्मान्तरण को देखकर मैंने भोजन बन्द कर दिया। जब तक धर्मान्तरण बन्द नहीं होगा तब तक मैं भोजन नहीं करूंगा।

राम मन्दिर का निर्माण कब होगा? लोग हमसे पूछ रहे हैं। हमें सरकार पर मन्दिर निर्माण के लिए कानून बनाने के लिए दबाव डालना चाहिए।

पूज्य दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी (वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन)

हमारे संस्कार हमारे जीवनचर्या में आने में मिलता है। भारत की भूमि पर कहीं पर जन्म हो, उसमें पाण्डित्व का प्रकटीकरण करें। आपके वात्सल्य का आंचल उसे भी शीतलता दे। कोई साधु वहाँ नहीं पहुँचा जहाँ ईसाई प्रचारक पहुँचते हैं। सभी में एक ज्योति है। मन से मन की तार जोड़ दो। गोमाता के विषय में सरकारें क्या करेंगी, यह अलग बात है, हमारी संवेदनशीलता जगे, यह हमारा दायित्व है। जिसे माता-पिता बोझ लगते हों, उस हिन्दू से गाय की रक्षा की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? गोहत्या रोकने के लिए सन्तों ने बलिदान दिया है। सन्तों की प्रामाणिकता पर प्रश्नचिह्न न लगे इसलिए योगी जी का दायित्व है कि राम मन्दिर का निर्माण हो, सन्तों को निराश नहीं होना चाहिए। आपकी परम्परा का व्यक्ति सत्ता पर है, उस पर विश्वास करें। उसका भी मार्गदर्शन करें। गोहत्या को रोकने के लिए कानून के साथ-साथ समाज का संस्कार भी होना चाहिए।

मैं नहीं जानती सरकारें क्या कदम उठायेंगी? लेकिन हिन्दू परिवार आज इतना ज्यादा संवेदनहीन हो गया है कि वह अपनी संतान को गर्भ में ही मार देते हैं और अपने बूढ़े माता-पिता को घर से बाहर निकाल रहे हैं। यह संवेदन-संस्कार हीन हिन्दू गाय की पीड़ा क्या समझेगा। उत्तरप्रदेश की योगी सरकार की पुलिस लैला-मजनुओं को पकड़ने में लगी हुई है जबकि उसको पकड़ना था आतंकवादियों को, इन बच्चों को माता-पिता द्वारा संस्कार देना था। भारतीय स्त्री अपनी सन्तानों को संस्कार न दे सकी, यह

चिन्तनीय है।

पूज्य हरिभक्त जी (नांदेड़)

गोचर भूमि होनी चाहिए, तभी गोपालन सुलभ हो पाएगा। सरकारी जमीन पर गोचारण बन्द कर दिया है। इसीलिए लोगों ने गाय पालना बन्द कर दिया।

पूज्य संत नामदेव जी महाराज

आज गाय को पालना कठिन हो गया क्योंकि गाय के प्रति श्रद्धा की कमी हिन्दुओं के अन्दर आ गई है। जहाँ गोपालन हो रहा है वहाँ भी गोचर भूमि न होने के कारण गोपालन बन्द हो रहा है।

पू० नरेन्द्रगिरि जी महाराज (अध्यक्ष, अखाड़ा परिषद, इलाहाबाद)

राम मन्दिर निर्माण के लिए कोर्ट के निर्णय को मानने के लिए हम बाध्य नहीं हैं। मन्दिर निर्माण के लिए सरकार को संसद में कानून बनाना चाहिए। सभी सन्तों को मांग करनी चाहिए कि सरकार संसद में कानून बनाकर राम मन्दिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त करे। इस कार्य में हमें सरकार का सहयोग करना चाहिए। अच्छे कार्य में उसका साथ देना चाहिए, यह हमारी परम्परा है।

पूज्य युधिष्ठिर लाल जी महाराज (रायपुर, छत्तीसगढ़)

गाय, गंगा का करो सम्मान तभी बनेगा भारत महान। गो, गंगा, मन्दिर का विषय सदैव से सन्तों का रहा है। हम लोग कहते नहीं, करते हैं, यही सन्त धर्म है। हमारे देश की कोई भी समस्या हो, सभी को मिलकर उसका समाधान करना चाहिए। हमने गंगा के प्रति पूरी जिम्मेदारी सरकार पर ही डाल दी है जबकि स्वयं की जिम्मेदारी माननी होगी। गंगाघाट का निर्माण, यह हमारी गंगा की सेवा है।

पूज्य रमेशदास जी महाराज (लाल द्वारा, होशियारपुर-पंजाब)

हम हमेशा से गो, गंगा, मठ मन्दिरों के विषय में चर्चा करते रहते हैं। हमारे राम मन्दिर का निर्माण कब हो, इसके लिए हम चिन्तित रहते हैं। राम मन्दिर निर्माण के लिए हमें सरकार पर दबाव डालना चाहिए।

गोमाता का जीवन परोपकार के लिए होता है, उसका वध घोर पाप कर्म है। गाय की रक्षा हो। इसके लिए कठोर कानून बनाया जाए।

हमारे सैनिकों पर पत्थर मारे जाते हैं। आतंकवादियों को महिमा मण्डित किया जाता है। हमारे देश के ही कुछ लोग उनका समर्थन करते हैं। यह चिन्ता का विषय है।

गंगा को स्वच्छ करने के लिए हम प्रयासरत हैं। स्वच्छ और अविरल गंगा, यह हमारा संकल्प है। गंगा, गाय एवं मंदिरों के प्रति हिन्दू समाज को स्वयं अपना धर्म निभाना होगा, सरकार के ऊपर निर्भर रहकर अपने धर्म से विमुख नहीं हुआ जा सकता है।

पूज्य मुकुन्द दास जी महाराज (जबलपुर)

गो, गंगा और मठों की बात हो रही है, मध्यप्रदेश के जबलपुर में 515 मठ तोड़े गए। जिस कलेक्टर के आदेश से यह तोड़े गए उसे सम्मानित किया गया। यह दुर्भाग्यपूर्ण है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र ईसाई मिशनरी धर्मान्तरण का कार्य कर रही है। हमें उन क्षेत्रों में जाकर धर्मान्तरण रोकने के लिए प्रयास करना चाहिए। गंगा की स्वच्छता के लिए मध्यप्रदेश में नमामि नर्मदे के नाम से नर्मदा यात्रा का आयोजन किया गया। उसी प्रकार के आयोजन गंगा के लिए 'नमामि गंगे' योजना बननी चाहिए।

जल, वृक्षों के वैज्ञानिक महत्त्व को बताएं। समाज को जल और वृक्षों के प्रति जागरूक करें, यह हमारा धर्म है। नई पीढ़ी को ऐसे आयोजनों से जोड़ें।

पूज्य नवलकिशोर दास जी महाराज (दिल्ली)

हिन्दू समाज में अपनी संस्कृति के प्रति निष्ठा दृढ़ होनी चाहिए। तभी हम अपनी संस्कृति और

शेष पृष्ठ 26 पर....

तृतीय सत्र

(01 जून, 2017 - ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी 2074)

सत्राध्यक्ष - पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज

श्री चम्पतराय जी (महामंत्री-विश्व हिन्दू परिषद)

विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री श्री चम्पतराय जी ने प्रस्ताव न रखकर तृतीय सत्र का शुभारंभ किया। जिसके कुछ बिन्दु निम्नांकित हैं -

- द्वितीय पक्ष से मौखिक वार्तालाप काफी हुआ था लेकिन कोई हल निकला नहीं।
- एक वर्ष पूर्व राष्ट्रपति महोदय के पास सन्तों का एक मार्गदर्शक मण्डल गया था। अभी भी उन्हें पुनः श्रीरामजन्मभूमि के विषय में याद दिलाई गई है।
- सन् 2014 में भारतीय जनता पार्टी जब सत्ता में आ गई, तब मुस्लिम समाज के व्यक्ति ने एक ऐप्लीकेशन सन् 2015 में डाली कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार सत्ता में आ गई, इसलिए इस विषय को वह अपने हिसाब से करा लेगी। वह याचिका का नम्बर आ गया।
- ऐसा लगता है कि सर्वोच्च न्यायालय शीघ्र ही इस मुद्दे का निस्तारण करने जा रहा है क्योंकि 90 प्रतिशत मुकदमें के विषय पर चर्चा हो चुकी है।
- अयोध्या हिन्दुओं की सांस्कृतिक भूमि है, इसलिए यहाँ पर किसी भी दूसरे धर्म का स्मारक नहीं बन सकता है। जिसके लिए ये लड़ाई चलेगी।

पूज्य रामविलास दास वेदान्ती जी (अयोध्या)

2013 हरिद्वार में केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक में माननीय अशोक जी सिंहल ने कहा था कि 2014 में भाजपा की बहुमत वाली सरकार आएगी और मन्दिर बनेगा। माननीय अशोक जी ने कहा था कि मैं वचन देता हूँ कि केन्द्र में कानून बनाकर मन्दिर बनेगा। 2018 में भाजपा की राज्यसभा में भी बहुमत आ जाएगा तब कानून बनाकर मन्दिर का निर्माण होगा, ऐसा विश्वास है। श्रीराम जन्मभूमि पर कोई भी चिह्न मस्जिद का नहीं था। हमें मोदी और योगी जी पर पूर्ण विश्वास है।

श्रीराम मंदिर अयोध्या के निर्माण के लिए हिन्दू समाज को किसी सरकार या न्यायालय पर आश्रित नहीं रहना है। कुरान में लिखा है जहाँ मीनार होती है, वहीं मस्जिद होती है जबकि वहाँ पर मीनार का कोई निशान भी नहीं था। इसलिए वहाँ श्रीराम का मंदिर ही बनेगा।

डॉ० प्रवीणभाई तोगड़िया जी

मन्दिर वहीं जहाँ रामलला हैं। अयोध्या में बाबर के नाम का कोई स्मारक नहीं बनना चाहिए। 1984 में मन्दिर का आन्दोलन चला। मुसलमानों से वार्ता की बात बार-बार उठती है। 450 वर्षों में मुसलमान नहीं माना, वो अब कैसे मानेगा? न्यायालय पक्ष में निर्णय देगा, इसकी कम गारन्टी है। इसलिए कानून के अलावा कोई विकल्प नहीं है। 1984 से लेकर आज तक हमने तथा सन्तों ने एक ही बिन्दु पर अपने को अडिग रखा है, सोमनाथ की भाँति भारत की संसद कानून बनाए और भव्य मन्दिर का निर्माण हो। श्रीराम जन्मभूमि केवल मन्दिर का निर्माण नहीं है, यह हिन्दुओं की श्रद्धा का विषय है। वार्ता से श्रीराम जन्मभूमि का समाधान नहीं हो सकता। सरकार कानून बनाकर मन्दिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त करे। सरकार की ओर से गत 3 वर्षों में कोई सकारात्मक उत्तर नहीं मिला है। इसलिए इलाहाबाद कुम्भ में सन्तों को सरकार से दृढ़ता से बात करनी होगी पुनः हुंकार भरकर सरकार को चेताना होगा।

पूज्य जितेन्द्र नाथ जी महाराज (नागपुर)

श्रीराम जन्मभूमि के विषय में इस आन्दोलन के लिए हमने अपना खून पानी किया है, सन्तों ने इसके

लिए युद्ध लड़ा। अपनी सरकार से सन्तों को आशा थी कि राम मन्दिर का निर्माण होगा। आज हमारे सामने हमारे अपने लोग ही आज 3 वर्ष के बाद हमारे नेतृत्व को सी.बी.आई के द्वारा कटघरे में खड़ा कर दिया गया। आरक्षण के लिए कानून बनाया जा सकता है तो श्रीराम जन्मभूमि के लिए क्यों नहीं, इसके लिए हमें आन्दोलन खड़ा करना चाहिए। तभी श्री अशोक सिंहल जी का स्वप्न पूरा हो पाएगा।

जनसंख्या असंतुलन-सन्त का जन्म व निर्माण घर में होता है। आज लोग एक या दो बच्चों के बाद सन्तान नहीं करते तो सन्त कहाँ से होंगे। आज घरों में परिवर्तन हो गया है। आज एक प्रश्न खड़ा होता है कि परिवार नाम की संस्था क्यों? सन्तान क्यों? हिन्दू जनसंख्या कम हो रही है। मुस्लिम जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है, यह हमारे लिए चिन्ता का विषय है। 480 देश अंग्रेजों के, 125 देश इस्लाम के, हिन्दुओं का केवल एक देश। धर्म के आन्दोलन की बात हम तभी कर सकते हैं जब हमारे परिवार में बच्चे होंगे। घर में बच्चे नहीं रहे तो हिन्दू परम्परा समाप्त हो जाएगी। धर्म के अस्तित्व के लिए जनसंख्या का महत्त्व है। लोग चिन्ता करते हैं कि अधिक बच्चे होंगे तो उनका पालन पोषण कैसे होगा? यह चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि जो सृष्टि में आता है, उसकी चिन्ता ईश्वर करेगा। परिवार संस्था राष्ट्र का विषय है। धर्म की रक्षा के लिए परिवार संस्था आवश्यक है। परिवार समाप्त हो रहे हैं।

पूज्य स्वामी राघवाचार्य जी महाराज (रैवासा पीठ, सीकर, राजस्थान)

मोदी जी से अपेक्षा की थी राम मन्दिर का निर्माण कराएंगे। लेकिन 3 वर्षों में ऐसा एक भी संकेत नहीं दिया। अब ऐसा लगता है कि संघर्ष के बिना मन्दिर का निर्माण संभव नहीं है। धर्माचार्य सरकार को बाध्य करे कि कानून बनाकर मन्दिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त करे। अशोक सिंहल जी को सच्ची श्रद्धांजली तभी दे पाएंगे, जब वह सरकार को श्रीराम मंदिर बनाने के लिए बाध्य करेंगे। आज हमें अशोक सिंहल, परमहंस जी की भूमिका निभानी है।

जनसंख्या असंतुलन का विषय अति चिन्ता का विषय है। हम दो हमारे दो हमारे लिए अभिशाप बन जाएगा। हमें अपने धार्मिक प्रवचनों में हिन्दू समाज में जनसंख्या का विषय लाना चाहिए। हिन्दू समाज को इस संकट से सचेत करना चाहिए।

पूज्य बलदेवानन्द जी महाराज (कोलकाता)

मुझे अयोध्या में जाकर अच्छा नहीं लगा। हम मोदी जी से आग्रह करते हैं कि कानून बनाकर मन्दिर का निर्माण कराना चाहिए। बंगाल में हिन्दू मन्दिर है, सरकार मुसलमानों को गोमांस खाने को कहता है। संस्कृत भाषा के लिए रोक लगाती है। संस्कृत भाषा पर बंगाल में प्रतिबन्ध लगाया है, उसे संस्कृत भाषा के लिए रास्ता बनाना चाहिए।

गंगा को स्वच्छ और अविरल बहने के लिए मार्ग बनाना चाहिए।

पूज्य डॉ० शाश्वतानन्द जी महाराज (कुरुक्षेत्र)

पू0 वामदेव जी ने कहा था, भले ही हमें राजनीतिज्ञ होने का कलंक लगे, फिर भी हमें श्रीराम जन्मभूमि के लिए काम करना चाहिए। हमारे देश की राजनीति बड़ी विचित्र है यहाँ राजनीति का निर्धारण अल्पसंख्यक समुदाय के आधार पर होता है। आज की सरकारों को स्पष्ट तौर से समझ लेना चाहिए कि केवल विकास के नाम पर वह सरकार में नहीं पहुँचे है बल्कि हिन्दू भावनाओं के नाम पर पहुँचे हैं।

श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त करने के लिए कोई बहाना नहीं होना चाहिए। आवश्यकता होगी तो हम फिर 1992 के समान आन्दोलन खड़ा करने में सक्षम हैं। श्रीराम जन्मभूमि हिन्दुत्व के अस्तित्व का सवाल है, विश्व में केवल हिन्दू चिन्तन ही सम्पूर्ण विश्व को संभाल सकता है।

जनसंख्या का विषय हमारे लिए बड़ा संकट है,

इस दिशा में भी सन्तों को समाज को जागरूक करना चाहिए। हिन्दुओं की जनसंख्या इसी तरह कम होती गई तो हमारे अस्तित्व पर सवाल खड़ा हो जाएगा। जहाँ हिन्दू कम हुआ है वह स्थान देश से अलग हो गया।

पूज्य डॉ० रामेश्वर दास वैष्णव जी महाराज (ऋषिकेश)

गृहस्थ को जब चिन्ता होती है तो वह सन्तों के पास आता है। सन्त सत्ता समाज का मार्ग प्रशस्त करते हैं। जनसंख्या पर आज सन्तों को भी चिन्ता है कि हिन्दू समाज की संख्या कम हो रही है।

राम मन्दिर के विषय में हमारी चिन्ताएँ प्रारम्भ हो गई हैं। कारण तीन वर्षों में अपेक्षित प्रयास सरकार की ओर से नहीं हुआ है। अब हमें अधिक इन्तजार नहीं करना चाहिए। श्रीराम जन्मभूमि के विषय में शिवाजी महाराज की तरह रणनीति बनाने की आवश्यकता है। शक्तियुक्त रहेंगे तो हमारी बात सुनी जाएगी, अन्यथा विषयों को टाला जाता रहेगा। शक्ति संचय करके ही राम मन्दिर का निर्माण होगा। 1984 से अब तक अनेक बार सत्ता परिवर्तन किए हैं। आज की सरकारें हिन्दुओं के कारण आई है। अत: सरकार को उनकी भावनाओं का आदर करना ही होगा। सन्त आशीर्वाद देते हैं, मोदी जी को आशीर्वाद दिया है। अभी कोई जल्दबाजी में ऐसा निर्णय नहीं लेना है जिससे हमारी मंदिर बनाने की योजना में कोई क्षति निर्मित हो। मंदिर बनेगा, निश्चित बनेगा। यह हमारा विश्वास है।

पूज्य हेमानन्द सरस्वती जी (कोषाध्यक्ष-साध्वी शक्ति परिषद) कोटा, राजस्थान

ऐसा लगता था कि भाजपा आएगी तो राम मन्दिर बनेगा लेकिन वह फलीभूत होता नहीं दिखता है। यह चिन्ता का विषय है। आज लगता है कि अपने ही लोग अपनों को छला करते हैं। हमें अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने की आवश्यकता है। हमारी बात हमारी कमजोरी के कारण नहीं सुनी जाती है। हमें अपने स्वयं पर भी विचार करने की आवश्यकता है। हमें संगठन को मजबूत करने की आवश्यकता है। हमारा संगठन मजबूत होगा तो सरकार भी हमारी बात सुनेगी। हमें समाज की सोच बदलने की आवश्यकता है। हमें अपनी संख्या बढ़ानी है। लोगों की मनोदशा बदलनी होगी। यह काम हमें ही करना होगा। आज पुन: रणक्षेत्र में उतरने की आवश्यकता है।

पूज्य स्वामी दिनेश भारती जी महाराज (जम्मू कश्मीर)

जम्मू कश्मीर का प्रत्येक हिन्दू राम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण के लिए कृत संकल्पित है। आज जम्मू कश्मीर में माँ भारती की जय जयकार हो रही है। आज वहाँ हमारे लिए अनुकूलता है। इससे पूर्व हमारे लिए कभी अनुकूल स्थिति नहीं रही। विश्व हिन्दू परिषद को मजबूत करने की आवश्यकता है, अयोध्या में मन्दिर अवश्य बनेगा। जम्मू-कश्मीर का हिन्दू समाज श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए आतुरता से शीघ्रता चाहता है। जम्मू-कश्मीर में अमरनाथ यात्रा पर अगर आतंकवादी हमला होता है तो पूरे जम्मू-कश्मीर में बजरंगदल हर-हर महादेव करेगा।

पूज्य अमृतराम जी महाराज (जोधपुर)

कानून की व्यवस्था तो पहले से चली आ रही है। हमारे बीच में ही हमारे जयचन्द बैठे हैं। पहले हमें उन जयचन्दों को समझना होगा। राम मन्दिर का निर्माण शीघ्र होना चाहिए। श्रीराम मन्दिर निर्माण के किसी भी प्रयास में सन्त समाज सदा तत्पर रहेगा।

जनसंख्या की दृष्टि से समाज को जागरूक करने की आवश्यकता है।

पूज्य ईश्वर दास जी महाराज (ऋषिकेश)

बार-बार राम मन्दिर का विषय उठता है। आज उसका महत्त्व है क्योंकि आज की सरकार से आशा है। गत तीन वर्षों में कोई सकारात्मक स्थिति दिखाई

नहीं देती। हमें मोदी जी से बात करनी चाहिए कि- सरकार को संसद में कानून बनाने के लिए प्रस्ताव लाना चाहिए और मन्दिर निर्माण के लिए कानून बनाने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। धर्मसंसद के समय तक यदि सरकार ने कोई निर्णय नहीं लिया तो हम आन्दोलन की घोषणा करेंगे।

जनसंख्या का असंतुलन सर्वाधिक चिन्ता का विषय है। हिन्दू जनसंख्या का तेजी से कम होना हिन्दू समाज और राष्ट्र दोनों के लिए चेतावनी है। मुस्लिम समाज 10-10 बच्चे पैदा करता है। उनके बच्चों का पालन हमारे संसाधनों से ही हो रहा है।

डॉ० सुरेन्द्र कुमार जैन (संयुक्त महामंत्री-विहिप)

जनसंख्या असंतुलन की चिन्ता 1988 से हम लोग कर रहे हैं। असम में समान जनसंख्या नीति बनाई है, यह सराहनीय काम किया है। केन्द्र सरकार को भी इसी प्रकार की नीति बनानी चाहिए। सन्त केन्द्र सरकार को आदेश दे। असम सरकार ने एक जैसी समान जनसंख्या नीति बनाई है। केन्द्र सरकार भी एक जैसी समान जनसंख्या नीति बनाये।

पूज्य स्वामी श्यामदेवाचार्य जी महाराज (जबलपुर)

श्रीराम जन्मभूमि का आन्दोलन 35 वर्षों से चल रहा है। इतने लम्बे कालखण्ड की यात्रा में मन्दिर भले ही न बना हो पर समाज में आज भेदभाव खत्म हुआ है। हमारे हिन्दू समाज के लोग ही आज मन्दिर निर्माण में बाधक हैं। हमारे सन्तों में भी इस प्रकार के लोग हैं जो मन्दिर निर्माण में बाधा बन रहे हैं। मुस्लिमों से हमारी सीधी लड़ाई होती तो कोई चिन्ता का विषय नहीं था लेकिन मुस्लिमों के रक्षाकवच हिन्दू ही बने हुए हैं। हमें मोदी सरकार को थोड़ा और समय देना चाहिए। मुस्लिम समाज में फूट डालने का काम हो रहा है। आज मुस्लिम समाज का भी बड़ा हिस्सा मन्दिर निर्माण के पक्ष में खड़ा हो रहा है। सरकार को यह आभास होना चाहिए कि साधु सन्त लम्बे समय तक इन्तजार नहीं करेगा।

हिन्दू समाज जनसंख्या कम करता है क्योंकि वह अपने बच्चों को सबल बनाना चाहता है। मुस्लिम में यह समस्या नहीं है।

पूज्य डॉ० आचार्य आनन्द दास जी (काशी) काशी कबीर चौरा के प्रतिनिधि

भारतवर्ष संक्रमणकाल से गुजर रहा है। 1925 में रोपा गया पौधा आज पल्लवित, पुष्पित वृक्ष बन गया है। निश्चित रूप से जिस दिन हुंकार भरेंगे उस दिन श्रीराम मंदिर बन जायेगा।

भारतवर्ष के लिए जनसंख्या का असंतुलन एक बड़ा संकट है। सरकार को समान जनसंख्या नीति बनाना चाहिए। सभी का समादर होना चाहिए। सभी के लिए समान कानून होना चाहिए।

पूज्य स्वामी अवचिलदास जी महाराज (गुजरात)

मुस्लिम समाज से वार्ता की बात आ रही है, न्यायालय का इन्तजार किया जाए, कानून बनाकर मन्दिर का निर्माण हो, ये तीनों प्रकार की बातें आ रही हैं। हमें भी अपना मत बनाना चाहिए कि हमें क्या करना चाहिए? कोर्ट निर्णय सर्वमान्य नहीं हो सकता, उसका इन्तजार नहीं करना चाहिए। मुस्लिम पक्ष से वार्ता का कोई अर्थ नहीं है। अब केवल तीसरा विकल्प है कि संसद में कानून बनाकर मन्दिर बने, यही विकल्प बचता है। आज सरकार हिन्दू मतों के ध्रुवीकरण करने से बनी है। विकास के साथ-साथ मन्दिर का निर्माण भी भारतीय अस्मिता का बिन्दु है। हमारा प्रतिनिधि मण्डल प्रधानमंत्री से मिलना चाहिए। हम सभी को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर पूर्ण विश्वास है। राष्ट्रीयता और हिन्दुत्व के विषय में कोई शंका नहीं हो सकती। योजना बनाने के लिए संघ, विश्व हिन्दू परिषद के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए। श्रीराम मंदिर निर्माण को लेकर सरकार थोड़ा सा भी विश्वास अगर देती है, तब एक सकारात्मकता सन्तों के अंदर आ जायेगी।

जनसंख्या नीति के विषय में भी केन्द्र सरकार से वार्ता करनी चाहिए। देश में समान जनसंख्या नीति

बननी चाहिए। जनसंख्या का असंतुलन देश के लिए खतरा है। सरकार हमारी रहनी चाहिए, बननी चाहिए, हमारी योजनाओं में देरी हो तब भी।

पूज्य दण्डी स्वामी रामदेवानन्द सरस्वती जी महाराज (वृन्दावन)

मीरबाकी ने तोड़ने के लिए किसी भी पक्ष से वार्ता नहीं की। हमें किसी से वार्ता नहीं करनी चाहिए। सरकार को और समय देने के पक्ष में मैं नहीं हूँ। कोर्ट के फैसले से कभी भी श्रीराम मंदिर नहीं बन सकता। इसके लिए सन्तों को सरकार से तत्परता लाने हेतु वार्ता करते रहना चाहिए।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पूज्य स्वामी हंसदेवाचार्य जी महाराज (हरिद्वार)

वार्ता कभी सफल नहीं हुई है, न ही भविष्य में होगी। इसलिए वार्ता का कोई अर्थ नहीं है। विपक्ष में अभी कोई नेता बनने की स्थिति में नहीं है। राष्ट्रविरोधियों का अभी लोकसभा से पलायन हुआ है अब राज्यसभा से होने वाला है। दोनों सदनों में बहुमत होने के पश्चात् श्रीराम मंदिर बन जायेगा। ऐसा हमारा विश्वास है। तीन बार तक भाजपा की सरकार आएगी। नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बनेगे। बैठकर योजना बनाने की आवश्यकता है। सरकार पर कितना दबाव बनाया जाए? नवम्बर की धर्मसंसद तक मार्ग प्रशस्त होने का मुझे विश्वास है। यदि तब तक कोई मार्ग नहीं निकलता है तो जैसे ढाँचा गिराया उसी प्रकार का आन्दोलन खड़ा कर मन्दिर बनाना चाहिए।

समान जनसंख्या नीति बननी चाहिए।

युगपुरुष पूज्य स्वामी परमानन्द जी महाराज (हरिद्वार)

संविधान के दायरे में यदि समाधान हो, तो जितनी जल्दी हो कर देना चाहिए। देश की सरकार संसद में कानून बनाकर तथा मुसलमान यदि समर्थन देते हैं तो उनका भी साथ लेकर मन्दिर बनाना चाहिए। मोदी सरकार को अपने इसी कार्यकाल में मन्दिर निर्माण का कार्य आरम्भ करना चाहिए। अधिक समय देने के पक्ष में नहीं हूँ।

समान जनसंख्या नीति भी बननी चाहिए। देश में मुस्लिमों की तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या चिन्ता का विषय है।

पू० स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज (भोलाझाल, मेरठ)

राम मन्दिर का विषय 1984 से नहीं बल्कि जब से मीरबाकी ने मन्दिर तोड़ा तब से मन्दिर के लिए हम संघर्ष कर रहे हैं। मन्दिर निर्माण के लिए निरन्तर हमारा प्रयास चल रहा है। 3 लाख से अधिक सन्तों, भक्तों ने बलिदान दिया। इस समय राम मन्दिर निर्माण का सुअवसर है। विरोधियों के मस्तिष्क में राम विरोध है, उनके मस्तिष्क में राम मन्दिर स्थापित करना। हमें नरेन्द्र मोदी पर विश्वास करना चाहिए। मन्दिर अवश्य बनेगा। यदि मोदी पर विश्वास नहीं करेंगे तो किस पर करेंगे? मोदी जी सबको जानते, समझते हैं, हमें विश्वास करना चाहिए। योगी जी पर अविश्वास करना स्वयं पर अविश्वास करने जैसा है। योगी और मोदी दोनों हमारे विश्वास पात्र हैं।

भारत में तीन प्रकार के गद्दार हैं - राजनीतिज्ञ, मीडिया, बुद्धिजीवी। जो न्यायाधीश कहता है कि मैं अपने विशेषाधिकार से इन 12 लोगों पर आरोप तय करता हूँ, ऐसे न्यायालय पर विश्वास नहीं करना चाहिए। ❑

जो चीज विकार को मिटा सके। राग-द्वेष को कम कर सके। जिस चीज के उपयोग से मन सूली पर चढ़ते समय भी सत्य पर डटा रहे वही धर्म की शिक्षा है। -महात्मा गांधी

भूल होना प्रकृति है, मान लेना संस्कृति है और सुधार लेना प्रगति है।

चतुर्थ सत्र

(02 जून, 2017 - ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी 2074 वि०सं०)

सत्राध्यक्ष - ज०गु० रामानन्दाचार्य पूज्य स्वामी हंसदेवाचार्य जी महाराज

पूज्य स्वामी शान्ति स्वरूपानन्द जी महाराज (उज्जैन)

पूज्य सन्तों ने दीप प्रज्ज्वलन किया इसके ही साथ प्रस्ताव महामण्डलेश्वर स्वामी शान्तिस्वरूपानंद जी महाराज ने पढ़कर सुनाया।

1985 के उडुपी में श्रीराम जन्मभूमि का आन्दोलन का वर्तमान स्वरूप में आरम्भ किया। 'आगे बढ़ो जोर से बोलो जन्मभूमि का ताला खोलो' यह संकल्प लिया था। प्रधानमंत्री से मिलकर उनसे वार्ता करनी चाहिए और अधिक समय नहीं देना चाहिए। हम सभी सन्तों को एकमत होकर इसका निर्णय करना चाहिए। करोड़ों हिन्दुओं की आस्था न्यायालय से ऊपर है। जिस प्रकार पिता को प्रमाणित न्यायालय नहीं कर सकता, उसी प्रकार यह न्यायालय नहीं कर सकता। विश्व हिन्दू परिषद हमें आश्वस्त करे कि प्रधानमंत्री से मिलकर मन्दिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा। पाँच सन्तों का चयन कर प्रधानमंत्री से मिलने के लिए प्रतिनिधि मण्डल बनाए और उनसे मिलकर मन्दिर निर्माण का रास्ता निकाले।

पूज्य रामशंकर दास जी महाराज (उत्तर बिहार)

मन्दिर सम्पूर्ण हिन्दू समाज की अस्मिता का प्रश्न बन चुका है। अयोध्या आस्था का प्रतीक है, यह अनेक बार प्रस्तावों में आ चुका है। हमारे अनेक नेता बाबरी मस्जिद-राम जन्मभूमि विवाद कहकर शब्दजाल बुन रहे हैं। मोदी जी सबका साथ सबका विकास की बात करते हैं। 'सबका साथ सबका विकास' इस नारे में 100 करोड़ हिन्दुओं की आस्था भी आती है। सरकार को हिन्दुओं की आस्था का सम्मान करना चाहिए। राम मन्दिर निर्माण के लिए शीघ्र कानून बनाना चाहिए। अयोध्या में बाबर की किसी प्रकार की स्मृति चिह्न स्वीकार नहीं है। सरकार के पास प्रतिनिधि भेजने के प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ। मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

पूज्य डॉ० राघवाचार्य जी महाराज (अयोध्या)

संसद के द्वारा कानून बनाकर मन्दिर निर्माण का प्रस्ताव आया है, मैं इसका समर्थन करता हूँ। शेष दो विकल्प बन्द हो चुके हैं। न्यायालय स्वयं ही इस विषय से स्वयं को अलग करना चाहता है। वार्ता से मुस्लिम पक्ष हमसे बचता दिखता है। ऐसी अवस्था में दोनों अन्य उपाय बन्द हो गया। इसलिए केवल एक ही मार्ग शेष है कि संसद में कानून बनाकर मन्दिर निर्माण का रास्ता प्रशस्त किया जाए। इससे हमारे अनेक हुतात्माओं को श्रद्धाजलि भी होगी।

पूज्य रामहृदय दास जी महाराज (चित्रकूट)

हम इस प्रस्ताव का पूर्ण समर्थन करते हैं। माननीय अशोक जी ने कहा था कि मोदी के अन्दर श्रीराम की शक्ति प्रवेश कर रही है, इसलिए मोदी जी पर हमें पूर्ण विश्वास है। इसलिए शीघ्र ही श्रीराम मंदिर निर्माण होगा।

पूज्य योगीराज दिव्यानन्द जी महाराज (हरियाणा)

हम इसका पूर्ण समर्थन करते हैं।

पूज्य म० म० उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज (हरिद्वार)

प्रस्ताव का समर्थन और स्वागत करता हूँ। तीन रास्ते बताए गए थे, उनमें से दो का रास्ता बन्द है। न्यायालय भी जानता है कि इस विषय का हल न्यायालय नहीं कर सकता। हमारे विरोधी समाज के धर्मग्रन्थ कुरान व हदीस में लिखा गजवाय हिन्दू होगा अर्थात् हिन्दुस्तान पर विजय होगी। इसके पश्चात्

जंजीरों से जकड़ कर लाया जायेगा हिन्दुओं को ऐसी मानसिकता रखने वालों से कभी वार्ता द्वारा मंदिर नहीं बन सकता। प्रधानमंत्री जी से मिलकर उनसे वार्ता करनी चाहिए। अपनी सरकार है, उसे जागरूक करना हमारा धर्म है। मन्दिर बनाना हमारी संस्कृति का विषय है। इसलिए संसद में कानून बनाकर ही मन्दिर का निर्माण संभव है।

पूज्य स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज - (पूर्व गृह राज्यमंत्री) परमार्थ आश्रम, हरिद्वार

श्रीराम जन्मभूमि का प्रश्न गम्भीर प्रश्न है। 1528 से लेकर 2017 तक अनेक संघर्ष व बलिदान हुए हैं, लम्बी यात्रा है। रामकथा की तरह ही श्रीराम जन्मभूमि की कथा कम लम्बी नहीं है। तीन बातों पर समाधान की बात होती रही है। बातचीत व न्यायालय दोनों से संभव नहीं हो रहा, अब केवल एक ही मार्ग है। जन्मभूमि का प्रमाण हो चुका है, न्यायालय का कार्य पूर्ण हो गया है। केवल संसद ही एक मात्र उपाय है। संसद में कानून बदलने का भी सामर्थ्य है। इसलिए एक ही उपाय संसद में कानून बने। आज हमारी भूमिकाएँ अलग हैं। केन्द्र और प्रदेश दोनों में हमारी सरकार है, इसलिए हमें विश्वास है कि मन्दिर बनेगा। 1949 से अनेक सन्त इस संघर्ष में संलिप्त हैं। विश्व हिन्दू परिषद ने इसे 1984 से अपने हाथ में लिया है। आज देश की सोच और व्यवस्था को बदलने में श्रीराम जन्मभूमि की ही भूमिका है। आज राम का राज्याभिषेक हो चुका है, अब हम वशिष्ठ की भूमिका में हैं। राम की राज्य व्यवस्था ठीक प्रकार चले, अपने लक्ष्य को पूर्णकर यह स्मरण दिलाने का है। अभी तक हमारी भूमिका विश्वामित्र की थी। आज हमारे अनुकूल सरकार है, हम अपनी बात सरकार से मनवा सकते हैं। हमारी समिति विपक्ष के नेताओं से भी मिले और उनसे समर्थन का आग्रह कर उन्हें समझाएँ। आज केन्द्र और प्रदेश दोनों में 2/3 बहुमत राम जी की कृपा से ही मिला है। सन्तों की एक समिति ऐसी बनाएँ जो सभी दलों के प्रमुखों से मिले और उन्हें इस विषय पर तैयार करे। आज अनेक मुस्लिम भी इस विषय पर तैयार हैं, वे भी हमें समर्थन करने को तैयार हों। हम आज फिर राष्ट्रपति से मिलें और सरकार को सुझाव दें और विपक्ष को भी सुझाव दें सकते हैं। यह विषय अब लम्बा नहीं खींचना चाहिए। सभी दलों के प्रमुखों से हमारे सन्तों का प्रतिनिधि मण्डल मिले। इसी जून मास में ही हम राष्ट्रपति व विपक्ष के नेताओं से भी मिलकर इस विषय के समाधान के लिए मिले। इस विषय के लिए सरकार विशेष सत्र भी बुला सकती है तो बुलाए। केवल कानून के द्वारा ही इस विषय का हल संभव है।

पूज्य श्री रामजीदास महाराज (चित्रकूट)

मन्दिर निर्माण का एकमात्र उपाय संसद में कानून बनाना है, इसके लिए जो भी हो करना चाहिए। इसके लिए विलम्ब न हो। श्रीराम मंदिर निर्माण के लिये जैसा भी मार्गदर्शन विश्व हिन्दू परिषद देता है, उसी के अनुसार सन्त तैयार है।

पूज्य रामतीर्थ दास जी महाराज (अयोध्या)

अब आशा की किरण दिखाई दे रही है। स्वामी चिन्मयानन्द जी के सुझाव का हम स्वागत करते हैं तथा संसद में कानून बनाने के प्रस्ताव का समर्थन करते हैं। भारत विश्व गुरु था और श्रीराम मंदिर निर्माण करके पुनः विश्व गुरु के पद पर आसीन हो जायेगा।

पूज्य स्वामी चिन्मयदास जी महाराज (अयोध्या)

इस प्रस्ताव का मैं समर्थन करता हूँ। देश का मुसलमान भी इसका समर्थन करने लगे हैं। आज करोड़ों मुस्लिम कहने लगे कि हमारे पूर्वजों ने हिन्दुओं के साथ श्रीराम मंदिर तोड़कर अन्याय किया है, अतः मंदिर निर्माण करके पूर्वजों की गलती सुधारी जाये।

पूज्य श्यामानन्द ब्रह्मचारी जी महाराज (मेघालय)

श्रीराम का मंदिर अपनी जन्मभूमि पर नहीं बनेगा तो क्या किसी और धर्म प्रमुख के जन्म स्थान पर बनेगा? मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

पूज्य शरणानाजारी जी महाराज, वोडो धर्मगुरु

इस प्रस्ताव को हमारा समर्थन है। राम मन्दिर यदि राम जन्मभूमि पर नहीं बनेगा तो कहाँ बनेगा? राम मन्दिर निर्माण के लिए शीघ्र सरकार कानून बनाए, यही एकमात्र रास्ता है।

पूज्य प्रेमशंकर जी महाराज

माननीय अशोक जी सिंहल ने कहा था कि केन्द्र में बहुमत की सरकार बनने पर मन्दिर अवश्य बनेगा। अब हमारी सरकार है, अब मन्दिर बनना ही चाहिए। श्रीराम मंदिर के निर्माण के लिये अयोध्या का सन्त समाज हर तरह का बलिदान देने को तैयार है।

पूज्य बौद्ध सन्त गुरु कर्माचार्य जी महाराज (नेपाल)

आज भारत में मोदी और योगी जैसा नेतृत्व मिला है, भारत विश्व शक्ति बनेगा। अयोध्या में राम मन्दिर व गोरक्षा के लिए हम दिल से समर्थन करते हैं। भारत को विश्वगुरु बनाना, राम मन्दिर बनाना, गोरक्षा करने का आशीर्वाद मोदी जी व योगी जी को ईश्वर से मिला है। हमें युगपुरुष के रूप में प्रधानमंत्री मोदी मिले और योगी के रूप में मुख्यमंत्री मिले, इसलिये अच्छा युग आने वाला है। इसलिये मंदिर निर्माण होगा और गौमाता की रक्षा होगी।

नेपाल हिन्दूराष्ट्र बना रहे। श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर का निर्माण सम्पूर्ण विश्व का विषय है।

पूज्य महामण्डलेश्वर ऋषि महाराज जी

श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण करने से भारत में सम्पूर्ण विश्व सर्व शक्तिमान हो जायेगा। हमें कभी शत्रु पक्ष को वार्ता के लिए साथ नहीं लेना चाहिए। क्योंकि एक बार शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद को राजीव गाँधी के पास लेकर गए थे, तब शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद पीछे हट गये थे। जो भी रणनीति बने उस सब का संचालन हमारे सन्त ही करेंगे। हम उसका समर्थन करते हैं।

पूज्य अंजनेशानन्द सरस्वती जी महाराज (दक्षिण बिहार)

हमारी भारत की संस्कृति सनातन संस्कृति है, जिसके आदर्श पुरूष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हैं। सोमनाथ मंदिर की तरह सरकार संसद में कानून बनाकर श्रीराम मंदिर बनाये।

पूज्य बाबा प्रभाकर दास जी महाराज (महिमा समाज, उड़ीसा)

श्रीराम जन्मभूमि की बात करते-करते हम थक चुके हैं। अब समय आ गया है कि मन्दिर निर्माण शीघ्र होना चाहिए। सभी सन्त सरकार को स्मरण दिलाए। हमारे संत जो कहते है वह भगवान स्वरूप है, इसलिये सन्तों को सरकार से वार्ता करनी होगी और सन्तों के मार्गदर्शन में कार्य करना होगा।

पूज्य कालीनन्द जी महाराज (जबलपुर)

मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ और प्रतिनिधि मण्डल विपक्ष के नेताओं से मिलने के प्रस्ताव का भी समर्थन करता हूँ।

पूज्य स्वामी नवलकिशोर दास जी महाराज

इस आन्दोलन के लिए सभी सन्तों ने परिश्रम किया है, उसी का परिणाम है कि भारत व उत्तर प्रदेश में भावनानुकूल सरकार है। विचारधारा के लोग होने पर भी उन्हें स्मरण दिलाने की आवश्यकता है। बिना रोये माँ भी दूध नहीं पिलाती यह ठीक है लेकिन फिर भी प्रधानमंत्री जी और राष्ट्रपति जी से वार्ता करनी चाहिये। श्रीराम मंदिर निर्माण के समय देश में विरोधी पक्ष द्वारा कलह बढ़ेगा, इसलिये हमारी इस दिशा में भी तैयारी रहें। मन्दिर के साथ-साथ समाज में चरित्र का निर्माण हो, इसके लिए हम कार्य करें।

पूज्य परमात्मानन्द गिरि जी (छत्तीसगढ़) के द्वारा गीत

राम लला का ध्यान करो मन्दिर का निर्माण करो गीत की प्रस्तुति की जिसका सार भाव यह था – राम नाम सृजनकर्ता है, उसका नाम परिस्थितियों का निर्माण कर लेगा। इसलिये सब कोई ज्यादा से ज्यादा राम नाम का जाप करों।

पूज्य श्यामदेवाचार्य जी महाराज (जबलपुर)

हम मन्दिर निर्माण के तीसरे विकल्प के प्रस्ताव का समर्थन करते हैं। स्वामी चिन्मयानन्द जी के सुझावों का भी हम समर्थन करते हैं। मुस्लिम बुद्धिजीवियों से भी सम्पर्क होना चाहिए। राम मन्दिर निर्माण के लिए जो भी करना पड़े, करना चाहिए।

पूज्य म० म० प्रेमानन्द भारती जी महाराज

आज के प्रस्ताव का समर्थन करते हैं। लम्बे समय से सन्त लोग लगे हैं। सन्तों ने केवल ढाँचा, केवल बाबरी मस्जिद का नहीं बल्कि दुष्ट सत्ताधारियों की सत्ता को भी ध्वस्त किया। अब भाजपा की सरकार है, उनका संकल्प था राम मन्दिर का निर्माण, अब मन्दिर शीघ्र बनना चाहिए। सन्त सम्पूर्ण मानव जाति के लिए कार्य करते हैं।

पूज्य म० म० महेश्वरानन्द जी महाराज (पाली, राजस्थान)

मेरा यह पहला मिलन है, राम मन्दिर व विश्व हिन्दू परिषद के साथ। मैं आपके इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ। हमें 'हिन्दू धर्म' इस शब्द का प्रयोग करना चाहिए। जब तक हम हिन्दू धर्म नहीं लिखेंगे तब तक समस्या नहीं सुलझेगी। हिन्दू धर्म जीवन जीने की कला है, ऐसा कहकर हिन्दू धर्म की महत्ता कम आँकी जा रही है। अभी हिन्दू धर्म को सम्प्रदाय माना जाता है।

पूज्य नौत्तम स्वामी जी (स्वामी नारायण सम्प्रदाय)

श्रीराम जन्मभूमि के विषय में प्रस्तावित जो मॉडल बनाया गया है, उसी प्रकार का मन्दिर बनना चाहिए। श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन से जुड़े हुए सन्त हैं, उन्हीं का प्रतिनिधि मण्डल बनना चाहिए। संघ और परिषद के प्रतिनिधि भी उसमें होने चाहिए। राम मन्दिर तो बनकर ही रहेगा। हम प्रस्ताव का समर्थन करते हैं।

पूज्य सन्त रामेश्वर दास त्यागी जी (लुधियाना)

न्यायालय की प्रकृति हमेशा से हमारी आस्था के प्रतिकूल रही है। उससे न्याय की आशा मूर्खता है। मार्गदर्शक मण्डल की बैठक में एकता, अखण्डता की बात भी आनी चाहिए। जम्मू कश्मीर का विषय भी हमने पहले उठाया था, उसका भी विषय आना चाहिए। कश्मीर के स्थायी समाधान का प्रस्ताव भी यहाँ पास होना चाहिए। मोदी सरकार इसका स्थायी समाधान करना भी चाहती है। वहाँ के नागरिकों के नागरिक अधिकारों को समाप्त करना चाहिए और सेना को पूर्ण अधिकार मिलना चाहिए।

शिवरात्री का पर्व सबसे बड़ा कश्मीर का त्योहार होता है किन्तु वहाँ वह पत्थर बाजों से नहीं मना पाते हैं। ऐसे पत्थर बाजों को दण्ड सेना द्वारा मिलना चाहिए, इसके लिए विश्व हिन्दू परिषद सरकार से सेना को यह अधिकार दिलवाने हेतु वार्ता करें।

पूज्य रवीन्द्रपुरी जी महाराज (सचिव, महानिर्वाणी अखाड़ा)

बड़ी संख्या में सन्त समूह संसद चले। एक योद्धा के रूप में सरकार को बाध्य करें। सन्तों को एक हाथ में माला, एक हाथ में भाला लेकर चलने की आवश्यकता है। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हिन्दुओं का तिरस्कार हो रहा है। संविधान में धर्म निरपेक्ष शब्द है ही नहीं, इमरजेंसी के समय इंदिरा गाँधी के सचिवों ने जोड़ दिया जिसके कारण हिन्दू धर्म को आहत होना पड़ रहा है।

पूज्य सन्त ज्ञानदेव सिंह जी महाराज (श्रीमहंत, निर्मल अखाड़ा)

श्रीराम जन्मभूमि से जुड़े हमारे पूर्वज चले गए,

हम भी जाने वाले हैं पर हम मन्दिर का दर्शन करना चाहते हैं। इसलिए अतिशीघ्र मन्दिर का निर्माण शुरू होना चाहिए।

पूज्य साध्वी प्रज्ञा भारती जी (महामंत्री-साध्वी शक्ति परिषद) भोपाल

विनय न मानत जलधि जड़ गये तीन दिन बीत। बोले राम सकोप तब भय बिन होय न प्रीत। अब राम मन्दिर का निर्माण सन्त समाज के द्वारा होगा। साध्वी भी सन्तों के साथ हैं। लोगों की धारणा को बदलने की आवश्यकता है, वह मन्दिर निर्माण से ही दूर होगी। हम केवल निवेदन ही न करें बल्कि दृढ़ता से भी सरकार से बात करें। सरकार को मन्दिर निर्माण के लिए बाध्य करना होगा।

पूज्य साध्वी विभानन्द गिरि जी (कटंगी, मध्यप्रदेश)

सोमनाथ की भाँति ही संसद में कानून पास होना चाहिए और राष्ट्रपति के द्वारा उद्घाटन होना चाहिए। माननीय अशोक जी सिंहल के स्वप्न को पूर्ण करना हमारा कर्तव्य है। यदि सरकार कानून नहीं बनाती है तो हमें संसद का घेराव करना चाहिए। हमने भाजपा को शासन के लिए नहीं अपितु राम मन्दिर के निर्माण के लिए बैठाया है। हमें मोदी और योगी दोनों को याद दिलाना होगा कि भाजपा ने राम मन्दिर के लिए संकल्प लिया था, अब उसे पूरा करिए।

पूज्य अमृतराम जी महाराज (इन्दौर)

जहाँ शक्ति होती है, वहीं शान्ति होती है। हमें अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने की आवश्यकता है। हमने शक्ति के माध्यम से ही ढाँचा गिराया है। इसलिये मंदिर निर्माण भी शक्ति से करें। हमें परशुराम की तरह शस्त्र उठाने की आवश्यकता है। शक्ति के साथ ही सभी सिद्धियाँ मिलती है। हम शक्ति से ही राम मन्दिर का निर्माण कर सकते हैं।

पूज्य विमलशरण जी महाराज (मधुबनी, उत्तर बिहार)

मैं प्रस्ताव का सर्व प्रकार से समर्थन करता हूँ। यदि सरकार कानून नहीं लाती है तो हमें शक्ति का प्रदर्शन करना होगा। हम किसी भी कीमत पर राम मन्दिर का निर्माण चाहते हैं। माला और भाला दोनों से मंदिर निर्माण हेतु सन्त संकल्पित हैं।

पूज्य कृष्ण चैतन्य ब्रह्मचारी जी महाराज (झारखण्ड)

मार्गदर्शक मण्डल के प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ। भारतीय संसद भारतीय मानबिन्दुओं की रक्षा की व्यवस्था करे। अब हमें सरकार को शीघ्र मन्दिर निर्माण के लिए कानून लाने के लिए बाध्य करना चाहिए। कल समय कैसा होगा, कोई नहीं जानता।

पूज्य भास्कर तीर्थ जी महाराज (महेन्द्र गिरि, उड़ीसा)

भगवान परशुराम की भाँति काम करना है, तभी मन्दिर का निर्माण होगा। विश्व हिन्दू परिषद जो निर्णय लेगा, उड़ीसा का सन्त समाज उसके साथ है। जैसे भी हो मन्दिर शीघ्र बनना चाहिए।

पूज्य ज्योतिर्मयानन्द जी महाराज

अपनी निजता से ऊपर उठकर सांगिक रूप से कार्य करें। अनेक महापुरुष चले गए, हम वहीं खड़े हैं। राम मन्दिर के लिए शक्ति की आराधना करने की आवश्यकता है। राम मन्दिर नेता नहीं सन्त बनाएँगे।

पूज्य ललितानन्द जी महाराज (समालखा, हरियाणा)

आज के प्रस्ताव का तन-मन-धन से समर्थन करते हैं। यदि सरकार मन्दिर निर्माण के लिए कानून नहीं लाती है और यदि आवश्यकता होगी तो हम हजारों की संख्या में सन्तों को संसद तक ले जाएँगे। मंदिर निर्माण हेतु भारत माता मंदिर के सदस्यगण साथ है।

पूज्य अविचल दास जी महाराज (गुजरात)

केवल संसद में ही कानून बनना चाहिए। इसके लिए जो भी मार्ग है, निकालना चाहिए। हमें विपक्ष से मिलने के विषय में नहीं सोचना चाहिए क्योंकि विपक्ष केवल नामशेष रह गए हैं, उनसे मिलने की आवश्यकता नहीं है।

पूज्य सन्त अक्षरदास जी महाराज (गुजरात)

ये बात निश्चित है कि संसद में कानून पारित होकर ही मंदिर निर्माण होना चाहिए। जिन्होंने कहा विपक्ष से मिला जाए, यह गलत है क्योंकि आज विपक्ष जैसा कुछ बचा ही नहीं है, उन्हें झूठा यश क्यों दिया जाये।

पूज्य देवानन्द जी महाराज (सचिव जूना अखाड़ा)

अब भी मन्दिर नहीं बनता है तो हम उसी प्रकार के आन्दोलन की तैयारी करें। हमें पहले राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से मिलकर बात करनी चाहिए। यदि उसमें भी बात न बने तो सभी सन्त अपनी शक्ति का प्रदर्शन दिल्ली में करें। सरकार के साथ बात करके समय सीमा तय करें। मन्दिर निर्माण के विषय में यह अन्तिम बैठक होनी चाहिए। अब बैठकें नहीं क्रिया का समय है।

पूज्य जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी हंसदेवाचार्य जी महाराज (अध्यक्षीय भाषण)

मार्गदर्शक मण्डल की बैठक में एकमत से संसद में कानून बनना चाहिए, इस विषय पर निर्णय हुआ है। मन्दिर वहीं, मस्जिद नहीं, बाबर के नाम से देश में कहीं नहीं। सन्त समिति विश्व हिन्दू परिषद के साथ रही है और हमेशा रहेगी। कोठारी बन्धुओं के शहीद होने पर स्वामी वामदेव जी महाराज ने जय श्रीराम का नारा चलेगा, यह संकल्प लिया। सन्तों में अनेक भेद थे, सन्तों की एकता का आधार श्रीराम जन्मभूमि का आन्दोलन बना। श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन ने ही 127 सम्प्रदायों को एक मंच पर खड़ा किया। भाजपा को 02 से 287 तक पहुँचाने वाला भी श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन ही है। आचार्य गिरिराज किशोर जी का संकल्प अधूरा रह गया। माननीय अशोक जी, महंत अवेद्यनाथ जी की भावना इसके साथ है। महंत अवेद्यनाथ जी ने लोकसभा का प्रतिनिधित्व किया है, उनके शिष्य योगी आदित्यनाथ जी आज उत्तर प्रदेश की सरकार का नेतृत्व कर रहे हैं। राम जन-जन के हैं, सभी सम्प्रदायों के हैं। हमारे महापुरुष प्रतीक्षा में हैं कि उन्हें तब तृप्ति मिलेगी, जब राम मन्दिर का निर्माण का कार्य पूर्ण होगा। पाँच विभूतियाँ जिनका संकल्प अधूरा है, उसे पूर्ण शीघ्र करना है। हमें अब कमल दल के अलावा किसी भी दलदल में नहीं फँसना है। सरकार हमारी है, परन्तु उसे भी चेताने का काम हमें करना होगा। राज्यसभा में बहुमत के पश्चात् सरकार को कोई अवसर नहीं देंगे। यदि सरकार मन्दिर का मार्ग प्रशस्त नहीं करती है तो हम महान आन्दोलन का आह्वान करेंगे। संसद में कानून बने, यह हमारा प्रस्ताव पास। अब उनको बाध्य करना होगा। प्रतिनिधि मण्डल में संघ, विश्व हिन्दू परिषद, सन्त समाज एवं भाजपा सभी के प्रतिनिधि होने चाहिए। 26 नवम्बर, 2017 तक का समय देना चाहिए, उसके बाद धर्मसंसद में हम बड़ी घोषणा करेंगे।

जगद्गुरु पूज्य स्वामी हंसदेवाचार्य जी महाराज के उक्त उद्बोधन के बाद जय श्रीराम उद्घोष के साथ केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक का समापन हुआ। ❑

एक बुद्धिमान व्यक्ति उसके किसी भी किए गए अपमान से उत्कृष्ट है, क्योंकि किसी के किसी भी अशोभनीय व्यवहार का उत्तर वो धैर्य के साथ और नियंत्रित होकर देता है।

महान धयेय महान मस्तिष्क की जननी है। -इमन्स

प्रस्ताव - 'सामाजिक समरसता' यानि छुआ-छूत मुक्त भारत

पतित पावनी माँ गंगा के तट हरिद्वार में 31 मई, 2017 को आयोजित विश्व हिन्दू परिषद का केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल छुआ-छूत मुक्त भारत, समरस, समृद्ध, सबल हिन्दू समाज बनाने का संकल्प करके कार्य योजना घोषित करता है।

छुआछूत एवं ऊँच-नीच का हमारे धर्म और समाज में कोई स्थान नहीं है। छुआ-छूत विचारों एवं व्यवहार में भी समाप्त होनी चाहिए। विश्व हिन्दू परिषद की उडुप्पी (कर्नाटक) के सन्त सम्मेलन में ''हिन्दव: सोदरा सर्वे'' अर्थात् हिन्दू परिवार में जन्मे हम सब भाई हैं, समान हैं, यह निर्णय पूज्य सन्तों ने ही किया था और इस निर्णय को कार्यान्वित करके हम छुआछूत, ऊँच-नीच से मुक्त, समृद्ध, समरस हिन्दू समाज अर्थात् 'हिन्दू हम सब एक' का समवेत स्वर से संकल्प व्यक्त करते हैं।

केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल में उपस्थित संत समाज की मान्यता है कि हिन्दू धर्म में सामाजिक छुआ-छूत को कभी शास्त्रीय मान्यता नहीं रही है, क्योंकि हम सबकी संस्कृति समान है और उस संस्कृति में घोषित परम्परा है 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' अर्थात् प्राणिमात्र में एक ही आत्मा है। जगद्गुरु रामानंदाचार्य जी ने सिद्धान्त दिया है कि ''सर्वे प्रपत्तेरधिकारिण: सदा'' अर्थात् सभी जीव सदा शरणागति के अधिकारी हैं। उन्होंने यहाँ तक कहा है कि ''जाति, पाति पूछे नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।'' संत तुलसीदास जी ने भी ''सिय राम मय सब जग जानि, करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानि।'' कह कर सभी को सिय-राम रूप मानकर हाथ जोड़ कर प्रणाम किया है। भारत का दर्शन सर्वत्र प्रभु-दर्शन करता है तो फिर हिन्दू समाज में कोई भेदभाव हो ही नहीं सकता।

हिन्दू समाज की एकता एवं रक्षा हेतु हिन्दू बन्धुओं से संत समाज अपेक्षा करता है कि-

- हमारे मंदिरों, घरों तथा संस्थाओं के द्वार सभी समाज-बन्धुओं के लिए खुले हों।
- सम्पूर्ण हिन्दू समाज अपने समाज के सभी घटकों को मंदिर प्रवेश और दर्शन कराने का प्रबन्ध करे।
- गाँव की श्मशान भूमि एवं जल प्राप्त करने का तालाब, कुँआ, नल सभी के लिए उपलब्ध हो।
- महापुरुष किसी एक जाति वर्ग के न होकर सम्पूर्ण राष्ट्र के होते हैं अत: सभी महापुरुषों की जैसे-नानक, बुद्ध, महावीर, वाल्मीकि, रविदास आदि की जयन्तियाँ और पुण्य तिथियाँ सभी हिन्दू एकत्रित होकर मनायें।
- **हिन्दू परिवार मित्र** - हम अनुसूचित जाति के परिवार को मित्र बनाकर उनके साथ आत्मीयता का व्यवहार करें।
- **कन्या पूजन** - हम अपने घर में किसी भी महीने की अष्टमी के दिन अनुसूचित जाति सहित सभी जाति की कन्याओं को घर बुलाकर उनके चरण धोकर पूजन करें।
- संत-महात्माओं से भी अनुरोध है कि वे अनुसूचित जातियों, जनजातियों की बस्तियों, ग्रामों में पदयात्रा करें, प्रवचन करें, सत्संग प्रारंभ करें, सत्संगों का विस्तार करें और संगत व पंगत के द्वारा समरसता का निर्माण करें और उपदेश दें।
- विधर्मियों के द्वारा हिन्दू समाज के किसी घटक अथवा समुदाय को धर्मभ्रष्ट करने, हिन्दू जीवन-मूल्यों तथा मान-बिन्दुओं के अपमान के प्रसंगों पर सम्पूर्ण हिन्दू समाज एकजुट होकर प्रतिकार कर अपनी एकता का परिचय दें। ❑

मनुष्य के लिए निराशा के समान दूसरा पाप नहीं है। इसलिए मनुष्य को इस पापरुपिनी निराशा को समूल हटाकर आशावादी बनना चाहिए। -हितोपदेश

प्रस्ताव - गोरक्षा

- **गोहत्या बन्दी का राष्ट्रीय कानून - गोहत्या रोकने का एकमात्र मार्ग**
- **गोहत्यारों के लिए आजीवन कारावास का प्रावधान किया जाए**

पतित पावनी माँ गंगा के तट हरिद्वार में आयोजित विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल का यह उपवेशन अपना मन्तव्य व्यक्त करता है कि गोमाता सम्पूर्ण हिन्दू समाज की आस्था का केन्द्र है। गोमाता की रक्षा के लिए हिन्दू समाज के गोभक्तों द्वारा संघर्ष करने की महान परम्परा रही है। परन्तु कुछ स्वार्थी तत्व जिस प्रकार इस पुनीत कार्य को विवादित बनाते रहे हैं, वह समझ से परे है। दुधारू पशुओं को हत्या के लिए बेचने की प्रक्रिया को नियमित करने के लिए केन्द्र सरकार के आदेश के विरुद्ध जिस प्रकार का वीभत्स एवं बर्बर प्रदर्शन केरल, बंगाल, तमिलनाडु आदि में किया गया, सन्त समाज उसकी कठोर निन्दा करता है।

हिन्दू समाज व सन्तों की हमेशा से माँग रही है कि आसेतु भारत में गोहत्या पूर्णरुपेण बन्द हो। भारत का संविधान व न्यायपालिका गोहत्या को निषेध करने वाले कड़े कानून के हमेशा पक्ष में रहे है। माननीय हिमाचल उच्च न्यायालय व राजस्थान उच्च न्यायालय ने तो इस दिशा में बहुत स्पष्ट शब्दों में परामर्श दिए हैं। इसलिए सन्तों के इस उपवेशन का स्पष्ट मत है कि गोहत्या बन्द करने के लिए केन्द्रीय कानून अविलम्ब बनाया जाए, जिसमें गोहत्यारों के लिए आजीवन कारावास का प्रावधान हो। गोमाता को राष्ट्रीय प्राणी घोषित करना इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम रहेगा।

देश के कई राज्यों में गोहत्या के कानून पर्याप्त कड़े न होने के कारण गोहत्यारे कानून से बचने का मार्ग निकालकर गोहत्या करते रहते हैं। केरल, बंगाल जैसे राज्यों में गोहत्या बन्दी का कानून न होने के कारण अन्य राज्यों से लाकर वहाँ बड़ी मात्रा में गोवंश को काटा जाता है। सन्तों का सुविचारित मत है कि गोहत्या बन्दी के राष्ट्रीय एवं कड़े कानून से ही गोहत्या बन्द होगी।

भारत के सभी राज्यों से अनाधिकृत पद्धति से गोनिकासी करके बांग्लादेश में लाखों गायों को ले जाकर काटने का कार्य आज भी चल रहा है। बांग्लादेश ले जाकर कटने वाले गोवंश को रोकने के लिए अधिक प्रभावी कार्य योजना तत्काल बनाई जाए।

जिन राज्यों में गोहत्या बन्दी के कानून हैं, वहाँ गोहत्या रोकने में प्रशासन की विफलता के कारण गोरक्षकों को कसाइयों का विरोध करते हुए गोमाता की रक्षा करने के लिए विवश होना पड़ता है। गोहत्यारे हर प्रकार के शस्त्रों से सुसज्जित रहते हैं और वे गोरक्षकों पर आक्रमण करके उनकी हत्या भी कर देते हैं। प्रशासन की विफलता के कारण ही गोरक्षकों को संघर्ष करना पड़ता है। दुर्भाग्य से इस समय देश में गोहत्यारों की बर्बरता और प्रशासन की विफलता की चर्चा नहीं होती अपितु गोरक्षकों को ही कटघरे में खड़ा करने का षड्यंत्र किया जा रहा है। ये गोरक्षक कानून का पालन करने में प्रशासन की सहायता करते हैं और अगर प्रशासन अपना दायित्व पूरा करे तो गोरक्षकों को संघर्ष करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। गोरक्षकों को अपमानित करने वाले इस षड्यंत्र की सन्त समाज कठोर शब्दों में निन्दा करता है।

मार्गदर्शक मण्डल देश की जनता का आह्वान करता है कि वे गोरक्षा, गोसेवा एवं गोसंवर्धन के लिए मजबूती के साथ सन्नद्ध रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हमेशा से गोहत्या निषेध के लिए केन्द्रीय कानून की माँग का समर्थन किया है। देश के सन्तों ने कई बार आन्दोलन किए हैं और 1966 में बलिदान भी दिए हैं। हिन्दू समाज तथा इन सबकी भावनाओं का सम्मान करते हुए केन्द्र सरकार गोहत्या बन्दी का राष्ट्रीय कानून बनाए, तभी राम, कृष्ण और महावीर की इस पावन धरती को गोहत्या के कलंक से मुक्ति मिल सकती है। ❑

प्रस्ताव - श्रीराम जन्मभूमि

- **संसद में तत्काल कानून बनाकर श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया जाए**
- **मन्दिर वहीं ..... अयोध्या में कोई नई मस्जिद नहीं ..... बाबर के नाम पर भारत में कुछ भी नहीं**

पतित पावनी माँ गंगा के तट हरिद्वार में आयोजित विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल का यह उपवेशन केन्द्रीय सरकार से मांग करता है कि संसद में कानून बनाकर श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया जाए।

श्रीराम जन्मभूमि भूखण्ड केवल जमीन या भवन का प्रश्न नहीं है, यह सौ करोड़ हिन्दुओं की श्रद्धा व आस्था का प्रश्न है। सौ करोड़ हिन्दुओं की यह आस्था है कि जहाँ आज रामलला विराजमान हैं, वही श्रीराम की जन्मभूमि है। किसी का जन्मस्थान कभी भी हटाया नहीं जा सकता तो भगवान राम का जन्मस्थान भी बदला नहीं जा सकता है। बाबरी ढाँचा एक विदेशी हमलावर द्वारा राम मन्दिर को तोड़कर बनाया गया था। इससे सम्बंधित सभी तथ्यों को स्वयं उच्च न्यायालय भी स्वीकार कर चुका है। बाबरी ढाँचा राष्ट्रीय शर्म का प्रतीक था, जबकि वहाँ पर भव्य राम मन्दिर का निर्माण राष्ट्रीय गौरव की पुन:स्थापना का विषय है। रामभक्त 1528 से ही वहाँ पर भव्य राम मन्दिर बनाने के लिए निरन्तर संघर्ष कर रहे हैं।

आधुनिक समय में हिन्दू समाज की भावनाओं के अनुकूल पूज्य सन्तों ने 1984 से श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन प्रारम्भ किया। तभी से सन्तों की मांग रही है कि संसद में कानून बनाकर ही राम मन्दिर का निर्माण हो सकता है। इसी मांग को लेकर तब से हिन्दू समाज निरन्तर संघर्षरत है। केन्द्र में आज शासन कर रही भारतीय जनता पार्टी ने भी राम मन्दिर के निर्माण के प्रति अपने संकल्प को बार-बार दोहराया है। 1987 के पालमपुर (हिमाचल प्रदेश) के अधिवेशन में राष्ट्रीय कानून से ही राम मन्दिर निर्माण करने का प्रस्ताव भी पारित किया था। इसलिए देश के हिन्दू समाज की भावनाओं का सम्मान, राष्ट्रीय गौरव की पुन:स्थापना और अपने संकल्प को पूरा करने के लिए केन्द्रीय कानून बनाने की दिशा में अविलम्ब प्रयास करना चाहिए।

संविधान के अनुसार भारत की व्यवस्था को चलाने के लिए तीन कार्यविभाग बनाए गए हैं- न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका। तीनों के कार्य क्षेत्रों का स्पष्ट वर्णन संविधान में है। कानून बनाने का काम विधायिका को ही दिया गया है, इसका अर्थ किसी कार्यविभाग के महत्त्व को कम करना नहीं है। राम मन्दिर निर्माण के लिए कानून बनाने का काम विधायिका का ही है, यह न्यायपालिका के कार्य में हस्तक्षेप भी नहीं है। कानून बनाने की मांग का अर्थ न्यायपालिका की अवमानना नहीं है।

पहले की तरह आज भी कई लोग श्रीराम जन्मभूमि के विषय का समाधान वार्ता के द्वारा करने की वकालत कर रहे हैं। आज से पूर्व अनेक बार वार्ताओं के प्रयास हो चुके हैं। स्वर्गीय चन्द्रशेखर जी के प्रधानमंत्री काल में मुस्लिम पक्ष से हुई विस्तृत वार्ता की जानकारी सभी सम्बंधित पक्षों के पास है। इस वार्ता में भी निर्णायक समय आने पर मुस्लिम पक्ष वार्ता से पीछे हट गया था। किसी भी वार्ता का कोई परिणाम मुस्लिम पक्ष द्वारा पीछे हटने के कारण नहीं निकल पाया। माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा वार्ता का सुझाव देने पर भी मुस्लिम पक्षकारों ने इस सम्बन्ध में किसी भी वार्ता से तुरन्त इन्कार कर दिया। अत: अब वार्ता की कोई संभावना नहीं है। विश्व के सभी देशों ने स्वतंत्र होते ही गुलामी के सभी स्मारकों को अविलम्ब हटाकर अपने राष्ट्र को गौरवान्वित किया था। भारत में भी एक अन्य हमलावर गजनी के स्मारक को कानून के द्वारा हटाकर पवित्र सोमनाथ मन्दिर बनाया था।

अब हिन्दू समाज और अधिक प्रतीक्षा करने के लिए तैयार नहीं है। राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक भव्य राम मन्दिर का निर्माण कानून के मार्ग से ही संभव है। आवश्यकता पड़ने पर राज्यसभा व लोकसभा का संयुक्त अधिवेशन बुलाकर इस कानून को पारित करना चाहिए। ❑

.....पृष्ठ 11 का शेष

परम्पराओं की रक्षा कर सकते हैं।

उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी

भारत में अगर कुछ अच्छाई है तो वह संतों के कारण ही है। भारत अब सोने की चिड़िया नहीं शेर बनेगा। इस कार्य में सन्तों के आशीर्वाद से श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत सरकार लगी है। हमारी श्रेष्ठ सन्त परम्परा ने इस देश को महान बनाया है। इसलिए हमेशा सन्तों का आशीर्वाद बना रहना चाहिए।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पूज्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज (चित्रकूट)

हमें निराश नहीं होना चाहिए। हमारी सरकार है, हमें उनसे काम करवाना है। इसके लिए एक शिष्टमण्डल नरेन्द्र मोदी से मिले। मोदी जी परिस्थितियाँ समझते हैं। मोदी जी के कार्यकाल में गंगा में परिवर्तन दिखाई देगा।

गो के विषय में अनुकूलता है। आज समाज जागरूक है, गोरक्षा के प्रति सजग दिखाई देता है। गो को राष्ट्रीय प्राणी घोषित किया जाए।

राम मन्दिर 6 दिसम्बर, 2018 तक बनकर रहेगा। मठ मन्दिरों की भी रक्षा होगी। सन्तों को अपनी भाषा संयम परिभाषा में नियत करना होगा। विश्वास रखना होगा। पहली बार ऐसा गंगा, गो, गायत्री का खुलेआम समर्थन किया है। पहली बार हुआ है जिसने व्हाइट हाउस में दुर्गा सप्तशती का पाठ किया है। मोदी जी से हम सबको कहना होगा आप विकास की बात कहते है तो आपको आध्यात्मिक विकास भी करना पड़ेगा जिसके लिये श्रीराम मंदिर बनाया जाए। क्योंकि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम आध्यात्मिक प्रेरणा पुरूष हैं।

हमारे जीवन में निराशा नहीं होनी चाहिए। 30 सितम्बर, 2017 तक अच्छा समाचार मिलेगा। अकुलाना नहीं, हमें साधना करनी पड़ेगी। नमामि नर्मदे की भाँति नमामि गंगा का भी आयोजन करे, इससे गंगा स्वच्छ और अविरल हो सके। ❑

ॐ
Susheel Kumar Nagpal
Hitesh Nagpal

(O) 23676210
M.: 9891181115
9990119857

भारतीय रैक्सीन कं.
BHARTIYA Rexine Co.

Office Bag, Travelling Bags, Nylone, Matti Coated Fabric

11372/73, Chowk Singhara, Nabi Karim, New Delhi-55
E-mail:bhartiyarexineco@gmail.com